सिद्धांत :-

केवल " मन " को सम्मुख कराके मन को पूर्ण कराया जाता है ! पूर्ण मन जो भी सोंचेगा वह सब पूरा होगा !

महावाक्य :-

(I) मन पूर्ण करो, कुछ करना न!

(II) कल्कि अवतरण हर मनुष्य में !

(III) केवल मन पूर्ण करो, पूरा अध्यात्म स्वयं घटित होगा !

सतगुरु पंथ

सतगुरु पंथ एक अध्यात्मिक पंथ है। इस पंथ की स्थापना जीव कल्याण के उद्देश्य से परम संत सद्गुरु वक्त सुरेशादयाल जी महाराज के द्वारा सन् 2003 में सीतापुर जनपद के मोचकला नामक छोटे से गांव में की गयी। गुरु जी का जन्म ग्राम/ पोस्ट भदमरा जनपद सीतापुर(उत्तर प्रदेश) भारत में दिनांक 11/10/1954 में हुआ। इन्होने विज्ञान वर्ग में लखनऊ विश्वविद्यालय से

परास्नातक की उपाधि प्राप्त की। तदोपरांत अपने देश के बहुत से धर्म गुरुओं से दीक्षा लेकर उन सभी धर्मो का गहराई से अध्ययन और निधि ध्यासन करके सांगोपांग पालन किया। तदोपरांत सभी धर्मो तथा सभी पंथों से सारों का सार तथा स्वयं के बोध संतृप्त होकर एवं सदगुरु मोहन दयाल जी महाराज जी से दीक्षा लेकर आत्मबोध को उपलब्ध हुए। उसके उपरांत महाराज जी ने सतगुरु पंथ की स्थापना की। इस पंथ का उद्देश्य जीव का पूर्ण उद्धार करके चौथे पद अर्थात अनामी धाम को पहुंचा देना है। समय समय

पर सतगुरु पंथ के सत्संगी साधुजन गांव-गांव जाकर लघु सत्संग के द्वारा जीवों को जगाते हैं और जिज्ञासु महाराज जी के दर्शन करके आत्म साक्षात्कार करते हैं।

सतगुरु पंथ क्या है :-

1. यह गायत्री की "आत्मदीक्षा" है। तथा संकल्प पूर्ति है :- "हम बदलेंगे युग बदलेगा "।

2. जयगुरुदेव पंथ का संकल्प पूर्ति है:-

“कलयुग में सतयुग आएगा।“

3. राधास्वामी पंथ आगरा का:-

(i)चौथा पद है।

(ii) राधास्वामी पद है।

(iii)सतनाम और सतगुरु पद है।

4. मानवता मंदिर होशियारपुर की :-

(i) नयी शिक्षा है।

(ii) शिक्षा में परिवर्तन है।

5. इस्लाम धर्म का:

(i)”अल्लाह” है।

(ii) मार्फ़त वाली इबादत है।

6. सिख धर्म का:- वाहेगुरु सतनाम है।

7. जैन धर्म का :- “कैवल्य पद “ है।

8. बौद्ध धर्म का:-

(i) निर्वाण है।

(ii) मोक्ष पद है।

9. सत्य सनातन धर्म :-

(i) एक ही आत्मा है।

(ii) राम है।

10. संतमत का:-

(i) सतनाम है। सत्यलोक है।

(ii) केंद्र है, किलिया है और धुरी है!

(iii) अनामी धाम है।

11. गीता का :- कृष्ण है

12. वेदों का :- अद्वैत पद है

13. जीव का :- परम धर्म है

सतगुरु पंथ

उत्पत्ति :-

परमातम् की धार से, निकला सतगुरु पंथ।
सभी धर्म, सभी पंथ का, मूल यही है पंथ ।।

राधास्वामी और कबीर, गायत्री परिवार।
सबका "मूल" लखो यहां,यही सार का सार ।।

राधास्वामी और कबीर,वही तो धारा होय।
लखना वही है धार को, लक्ष्य जीव का सोय।।

इंद्रिय मन और सुरत का, परिवर्तन होइ जाय।
हम बदलेंगे, युग बदलेगा,लक्ष्य पूर्ण होइ जाय।।

सदगुरुओं, महापुरुषों द्वारा कहे गए वचनों को सतगुरु पंथ कैसे पूरा करता है:-

<u>गायत्री परिवार के अनुसारः-</u>

हम बदलेंगे - युग बदलेगा

इससे पूरा होता है क्योंकि हम में पूर्ण परिवर्तन हो जाता है।

I. इन्द्रियां, अंतर्मुखी।

II. मन कागा से हंस।

III. कुमति - सुमति हो जाती है।

IV. काग गमन गति - हंस गमन गति में बदल जाती है।

V. दृष्टि - विवेक की हो जाती है।

VI. चित्त की वृत्तियों का निरोध हो जाता है।

VII. सुरत स्थिर हो जाती है।

VIII. सारथी परिवर्तन - मन के स्थान पर आत्मा द्वारा संचालन होने लगता है।

IX. जीव को मोक्ष अवस्था प्राप्त होती है।

X. जीव की दोनों आँखें जो बंद हैं वह खुल जाती हैं।

XI. जीव परिधि से केन्द्र पर आ जाता है।

XII. जीव सभी शरीरों को पार करके विदेह स्थित प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार से हमारे मे सभी परिवर्तन स्वतः ही हो जाते हैं।

बाबा जयगुरु देव जी के द्वारा कहा गया है किः

कलयुग में सतयुग आयेगा।

धर्म के चार पैर या पद है:-

I. हमारा शरीर या इन्द्रियां

II. हमारा मन

III. हमारी सुरत

IV. आत्मा

कलयुग हमारा शरीर है जो पहला पद है और आत्मा ही सतयुग है जो चौथा पद है। अतः मनुष्य शरीर में ही आत्मा प्रकट हो जाती है अतः कलयुग में सतयुग आयेगा पूरा हो जाता है।

राधास्वामी पंथ आगरा :-

तीन छोड़ि चौथा पद दीन्हा।

सत्यनाम, सतगुरु, गति चीन्हा ।।

तीन पद तन, मन, सुरत छोड़ दिये जाते हैं, केवल आत्मा का ही अध्ययन होता है।

सनातन धर्म :- आत्मा ही सत्य है

वही सनातन अर्थात् सबसे पुरानी है !

उसी को जानना ही हमारा धर्म है!

सतगुरु पंथ में केवल आत्मा का प्रैक्टिकल ज्ञान कराया जाता है!

सिक्ख धर्मः- के अनुसार

वाहे गुरु सतनाम

वही आत्मा ही सतनाम है वही सतगुरु पद है।

सतगुरु पंथ क्या है:-

सतगुरु के अध्यात्म में, एक ही धार का खेल।

मन की धार को पलट दो, परमातम से मेल ॥

सिध्दांतः-

तन थिर, मन थिर, सुरत थिर,निरत भी यदि थिर होय

आतमघट तब प्रकट हो, धार गिरै फिर सोय।।

पारस सुरत, संत के पासा।

छुवै सुरत से,सन्त बनि जाता ।।

आतम जानि,परमातम जाने, संत कहावै सोई ।

यह भेद काया से न्यारा, जाने बिरला कोई ।।

नौ द्वारे संसार के मान,

दसवां द्वार है मन का मान।

ग्यारहवें द्वार से परमात्मा जान।।

सदगुरु केवल दृष्टि डालकर, शिष्य की सुरत को अपनी पारस सुरत से छू देता है जिससे शिष्य की सुरत भी पारस सुरत बन जाती है और आत्मघट प्रकट हो जाता, जिससे आत्मा की धार आत्मघट पर गिरने लगती है।

सतगुरु पंथ की विशेषताएं:-

मन की संगत बदलकर, मायाधीश बनना :-

मन कि संगत होय जस,रंगत वैसी होय।
मन को जोड़ों आत्म संग,माया चेरी होय।।

सारथी परिवर्तन :-

यह मन है इस रथ का सारथी,
इसको चाहे जिधर ले जाये!!
इन्द्रियां है इस रथ के घोड़े,
इंद्रियों को विषयों में यह लगाये!!
मन सन्मुख हो,आत्मा के यदि,
धार आत्मा की मन पाये!!
स्वयं आत्मा सारथी बनकर,
इस रथ को वह स्वयं चलाये!!

सतगुरु पंथ का मूल क्या है:-

सतगुरु कहते धार को, पंथ तो घट ही होय!

घट यह कैसे प्रकट हो, पंथ कहावै सोय!!

सभी गुरुओं के द्वारा कहे गये सभी वचनों को " सतगुरु पंथ " पूरा करता है जैसे :-

(I) आगे जो संत होंगे वह अध्यात्म की शिक्षा में पूर्ण परिवर्तन कर देंगे!

(II) आगे जो संत सद्गुरु होंगे वह शिक्षा, दीक्षा को सीधे अनामी धाम से ही प्रारम्भ करेंगे!

(III) जिस दिन नामदान करेंगे उसी दिन अनामी धाम पहुँचा देंगे!

(IV) कोई नाम या कोई साधना न देकर केवल अपनी " दृष्टि " से ही जीव का उद्धार करेंगे!

(V) यह पूर्ण शिक्षा होगी, इसके आगे कोई शिक्षा नहीं होगी!

सतगुरु पंथ के बारे में:-

1) सतगुरु मत, अद्वैत मत, क्षीरसिन्धु, सतनाम।
मूल, बोध, अपरोक्ष मत, आत्म, बिदेह, अनाम।।

2) शिष्य को करना कुछ नहीं, यह सद्गुरु का काम!
शरणागति को सीख लो, तुम्हें मिलेगा राम!!

3) तत्व, प्रकृति, ब्रम्हाण्ड सब, बस में सब होइ जाय!
तीन लोक की शान्ति, छिन, पल में मिलि जाय!!

4) देवलोक अनुरूप हो, मति सुमति होइ जाय!

मन की गति भी विदेह हो, विवेक प्रकट होइ जाय!!

5) न कहीं आना,न कहीं जाना।

आपे में आप समाना ।।

6) गुप्त नहीं, परगट नहीं, न करता स्पर्श ।

अन्दर, बाहर है नहीं, गुरु से करो विमर्श।।

7) <u>कल्कि अवतरण :-</u>

1. सतयुग में देवता और दैत्य अलग - अलग लोकों में रहते थे- स्वर्गलोक और पाताललोक में।

2. त्रेता में एक ही लोक में रहने लगे-

जैसे:- रावण और राम

3. द्वापर में एक ही परिवार में रहने लगे-

जैसे:-कौरव और पांडव

4. कलयुग में एक ही शरीर में रहने लगे हैं

अतः कल्कि अवतार सभी के शरीरों में अलग अलग होना है।

5. यह पूर्ण अवतार होगा, इसके बाद में कभी भी कोई अवतार नहीं होगा।

मन की दृष्टि हो सन्मुख आत्म के,

मन की मति भी सुमति होइ जावै।।

मन की गति, बिदेह की होकर,

जीव बदल,आतम बनि जावै।।

काला मन भी सफेद तुरत हो,

आयाम अनन्त पार होइ जावै।।

जीव सवारी करे इस मन पर,

कल्कि अवतरण का नाम धरावै ॥

एकै साधे सब सधै :-

तत्व,प्रकृति, ब्रम्हाण्ड सब,बस में सब होइ जाय!

तीन लोक की शान्ति छिनपल में मिलि जाय।।

देवलोक अनुरूप हो,रिध्दि,सिध्दि,मिलि जाय ।

गति अचल,मतिहंस की,विवेक,प्रकट होइ जाय।।

सतगुरु पंथ को क्यों माने :-

सतगुरु पंथ को मान लो, यही सत्य है ज्ञान ।

परमातम तुरतै मिले, मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण ॥

सतगुरु पंथ में क्या-क्या सीखना है:-

I. सदगुरु शिष्य के मन की धार को पलटकर परमात्मा की धार के सन्मुख कर देता है । जिससे जीव बदलकर परमात्मा ही बन जाता है।

जानति तुमहि, तुमहि होइ जाई ।

II. इस पंथ में कोई पूजा, पाठ, सुमिरन, ध्यान, भजन, अजपा, जाप इत्यादि कुछ भी करने को नहीं बताया जाता है।

(III) शरणागति :-

- शरणागति का अर्थ है गुरू की बात मानना !

- मन को आत्मा की शरण में आना या समर्पित होना !

सहज,समर्पण और अनन्य,शरणागति होइ जाय!

क्रिया,कर्म सब छोडकर,गुरु की शरण में जाय!!

IV. **सीखना :-**

i. Living - रहे संसार में, मन परमात्मा में-

कर से कर्म करो विधि नाना,

मन राखो जहाँ कृपानिधाना।

ii. Loving- unconditional love for God

परमात्मा से बिना शर्त प्रेम करें।

iii. Leaving- माया को मोक्ष में बदलना।

V. **मन में नम्रता:-**

मन में जितनी नम्रता, उतना ऊँचा मन।

उतना ही ऊंचे उठो, सभी प्राप्त हों धन।।

VI. <u>पॉजिटिव सोंच हो:-</u>

सोच पॉजिटिव और ऊंची हो, क्योंकि जो भी सोचोगे वही होने लगेगा।

जो इच्छा करिहौ मन माहीं,
राम कृपा कुछ दुर्लभ नाहीं।।

<u>सतगुरु पंथ क्या है:-</u>

I. यह एक पूर्ण अध्यात्मिक मत है।

II. अध्यात्म का अर्थ होता है, अध्ययन + आत्मा का।

III. यह "आत्मा" को जानने का पंथ है।

IV. **<u>लोग भ्रम बस :</u>-**

❖ प्रकाश को ही आत्मा मान लेते है जो गलत है क्योंकि प्रकाश मैं सात खण्ड है और आत्मा अखण्ड है।

❖ ब्रम्हा और परमात्मा का भेद न जानकर, भ्रमवस ब्रम्हा को ही परमात्मा मान लेते है जबकि परमात्मा पारब्रम्हा है।

❖ ईश्वर और परमेश्वर का भेद न जान कर दोनों को एक मानते हैं।

❖ नाम और अनाम का भेद न जानकर भ्रम बस नाम को ही सत्य मान लेते हैं जबकि अनाम ही सत्यनाम है। नाम और रूप दोनों साथ में होने के कारण द्वैत होते हैं।

❖ जीव और आत्मा में भेद न मानकर दोनों को एक मानते हैं और जीव को ही आत्मा कहते हैं यह गलत है क्योंकि जीव एक बूँद है आत्मा की।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी,

चेतन,अमल,सहज सुखरासी।

V. आत्मा को ही परमात्मा, निर्वाण पद, परम पद, अद्वैत पद, सतगुरु पद, अनामी, चौथा लोक, राम इत्यादि नामों से कहा जाता है।

VI. <u>आत्मा :-</u>

- न साकार है और न निराकार।
- न शरीर के अन्दर है और न शरीर के बाहर है।
- न यह गुप्त है और न यह प्रकट है।
- व्यापक सर्व, सर्व से न्यारा है।
- किसी को स्पर्श नहीं करता है।
- केवल एक "आत्मा" को ही लखाया जाता है इसे ही आत्मसाक्षात्कार कहा जाता है।

- जानने योग्य केवल आत्मा ही है। इसे जानने के बाद कुछ भी जानना शेष नहीं रहता है।

सतगुरु पंथ की आवश्यकता क्यों है-

1. जीव का उद्देश्य केवल परमात्मा को ही प्राप्त करना है,दूसरे को नहीं।
2. परमात्मा ही स्वयं संचालित ,स्वयं प्रकाशक, नाम रूप से न्यारा है। उसको प्राप्त करने के बाद सब कुछ स्वयं ही होने

लगता है। आप परमात्मा द्वारा संचालित हो जाते हैं।

3. कबीर पंथ को छोड़कर लगभग सभी मत और पंथ की क्रियाएँ द्वैत की हैं। उनमें सुमिरन, ध्यान, भजन, जप, योग, सुरत ,शब्द योग इत्यादि किया जाता है, यह क्रियाए द्वैत की हैं।

4. परमात्मा ही केवल अद्वैत है, केवल उस एक को साध लेने से शेष सब कुछ सध जाता है।

एकै साधे सब सधे,सब साधे सब जाय।

5. नाम,रूप कुछ है नहीं , संचालित है स्वयं सभी प्रकाशित उसी से , बूझो वो है कौन॥

6. परम धर्म है जीव का,सबका है सिरमौर ।

इसी एक से सब सधे, नहीं दूसरा और।।

सतगुरु पंथ की मुख्य विशेषताएँ:-

1. केवल दृष्टि डालकर ही “आत्मघट” प्रकट किया जाता है। जिससे आत्मा की धार, आत्मघट पर गिरने लगती है।
2. जिस दिन नाम दान दिया जाता है उसी दिन जीव को अनामी धाम पहुंचा दिया जाता है।
3. उसके बाद कोई साधना नहीं की जाती है।

4. यह अन्तिम है इसके आगे कुछ भी नहीं है।

5. यह परमपद है, जीव को मोक्ष, मुक्ति प्राप्त हो जाती है!

6. पुनर्जन्म नहीं होता है।

7. इसको जानने के बाद कुछ जानना शेष नहीं रहता है।

8. इसको जानने से ही, संत और परमसंत बनते है इसके अलावा कोई दूसरा उपाय नहीं है।

9. अकर्म गति स्वतः ही प्राप्त हो जाती है।

10. यह माया को मोक्ष में बदलने की प्रक्रिया है।

11. ब्रह्मलोक और देवलोक सब उसी एक से निकले हैं।

12. व्यक्ति का पूर्ण आन्तरिक परिवर्तन हो जाता है!

13. यह अन्तर के तत्वों को अतत्व में बदलने की प्रक्रिया है।

14. सभी धर्म, सभी पंथ का मूल यही है। सब इसी से निकले है।

15. यह ज्ञान नहीं है, यह बोध है।

16. आत्मा को जानने का नाम आत्मबोध है।

17. सदगुरु सुरेशादयाल का सत्संग यूट्यूब पर सुनने के लिए **SATGURU PANTH** चैनल का उपयोग करें।

18. सदगुरु द्वारा लिखीं पुस्तकें निम्न वेबसाइट के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं-

वेबसाइट.....

सुरेशादयाल

ब्रह्मज्ञान योग संस्थान

मोचकलाँ, बिसवाँ, सीतापुर (उ. प्र.)

सम्पर्क सूत्र -9984257903